Peer Reviewed Refereed
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

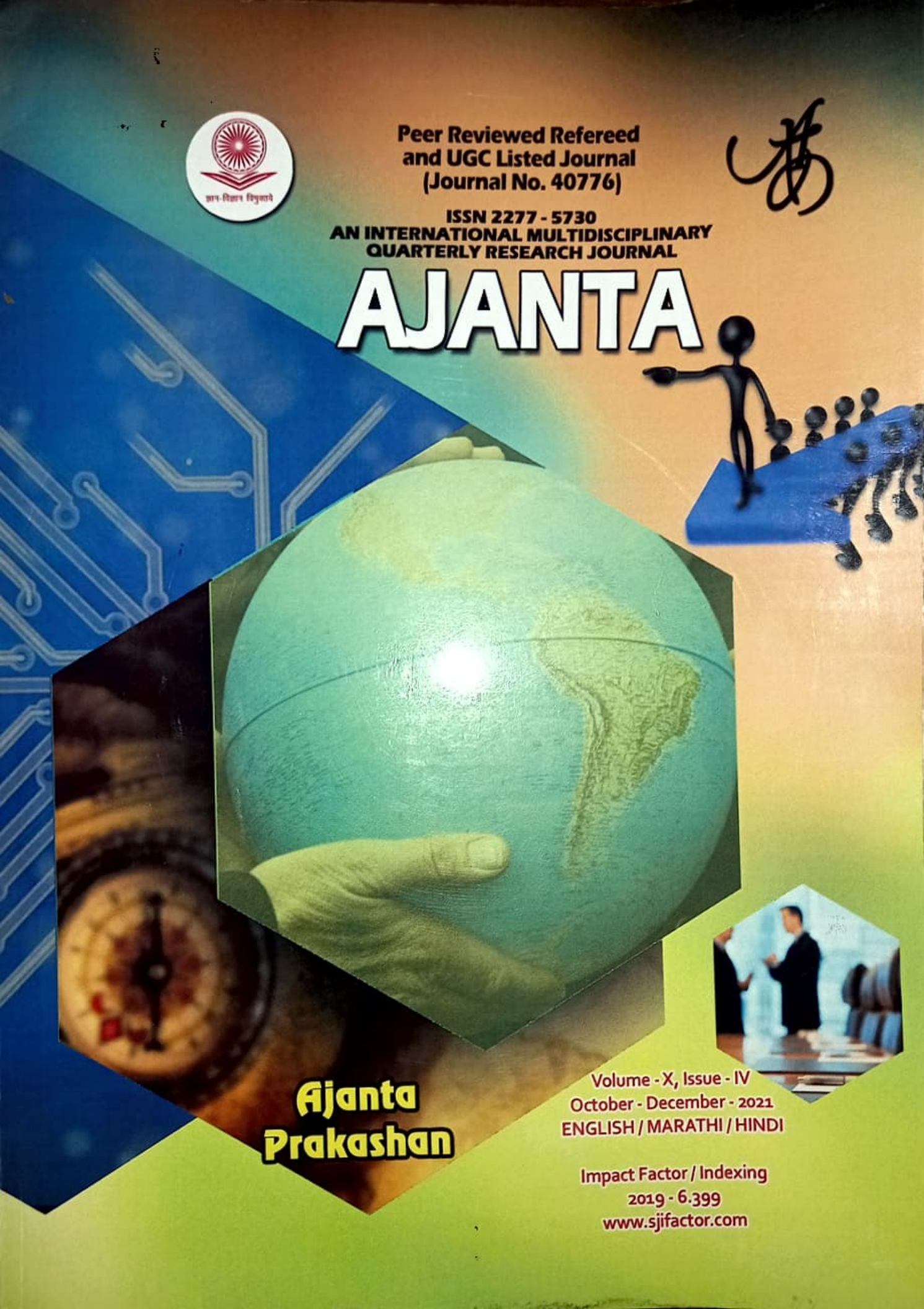

Ajanta
Prakashan

Volume - X, Issue - IV
October - December - 2021
ENGLISH / MARATHI / HINDI

Impact Factor / Indexing
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख और लेखक के नाम	पृष्ठ क्र.
१	गाँधी चिंतन और भारतीय महिलाओं का पुनरुत्थान **प्रा. अंजना विजन**	१-४
२	महात्मा गाँधी की आर्थिक दृष्टि **ज्योति सिंह**	५-९
३	प्रेमचंद के कथा साहित्य में गाँधीवाद **डॉ. मिथिलेश शर्मा**	१०-१२
४	भारतीय साहित्य पर गाँधीवाद का प्रभाव **नम्रता सिंह**	१३-१६
५	वर्तमान समय में गांधीवाद की प्रासंगिकता **डॉ. संगीता ठाकुर**	१७-१९
६	पर्यावरण नैतिकता एवं मानवी मूल्य : एक गांधीवादी विचार **शीतल ठाकूर**	२०-२२
७	वर्तमान में महात्मा गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता **डॉ. स्मिता त्रिपाठी**	२३-२७
८	आजादी का अमृत वर्ष, गांधीचिंतन व दलितों की स्थिति **डॉ. दिनेश पाठक**	२८-३२
९	अहिंसा और महात्मा गाँधी **रेनू यादव**	३३-३५
१०	साम्प्रदायिक उन्माद के दौर में गांधीजी के शांति व अहिंसा के मूल्य **डॉ. उर्मिला सिंह**	३६-३९
११	महात्मा गाँधी : सत्य और अहिंसा **श्री. संतोष कुमार कमला प्रसाद शर्मा** **डॉ. बालकवि लक्ष्मण सुरंजे**	४०-४२
१२	महात्मा गाँधीजी और शिक्षा **डॉ. संतोष मोटवानी**	४३-४५

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख और लेखक के नाम	पृष्ठ क्र.
१३	गाँधी को फाँसी दो ! नाटक में गाँधी जी के संघर्ष के विविध आयाम **सोनी विश्वकर्मा** **डॉ. जयश्री सिंह**	४६-५०
१४	जीवन कार्य के लिए महात्मा गांधी के विचार **राजेश यादव**	५१-५५
१५	महात्मा गाँधी : सत्य और अहिंसा **मधु मेहता साथी**	५६-६१
१६	किम्वदंती पुरुष : गाँधी **श्यामसुंदर पाण्डेय**	६२-६६

५. वर्तमान समय में गांधीवाद की प्रासंगिकता

डॉ. संगीता ठाकुर
सोनेपंत दांडेकर महाविद्यालय, पालघर.

प्रस्तावना

"दे दी हमें आजादी बिना खडक बिना ढाल.
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल"

यह गीत मैंने बचपन से सुना भी है और गाया भी है। इस प्रार्थना ने बचपन से ही मेरे मन पर एक विशेष छाप छोड़ी है। युग पुरुष अपने समय की देन होते हैं। उनका युग प्रवर्तक व्यक्तित्व पूरे विश्व के लिए सदा - सदा के लिए प्रेरणादाई सिद्ध होता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का व्यक्तित्व बहुमुखी था।वे राजनेता धर्म सुधारक नीति विता और महान शिक्षा शास्त्री थे। भारतीय जनता जो युग युग से ही उसे दीन -हीन एवं प्रताड़ित थी, गांधी जी ने उसे अंधकार के अतल सागर में डूबने से बचा कर मानवता की सेवा केइतिहास को स्वर्ण अक्षरों से लिखने योग्य बना दिया।मूलरूप से गांधी जी की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था करुणा, प्रेम, नैतिकता, धार्मिकता व ईश्वरीयभावना पर आधारित है। उन्होंनें नरसेवा को ही नारायण सेवा मानकर दलितोद्धार व दरिद्रोद्धार को अपने जीवन का ध्येय बनाया। वे शोषणमुक्त, समतायुक्त, ममतामय,परस्पर स्वावलम्बी, परस्पर पूरक व परस्परपोषक समाज के प्रबल हिमायती थे।

गांधी के लिए वेद, पुराण एवं उपनिषद का सारतत्व ही उनका ईश्वर हैऔर बुद्ध, महावीर की करुणा ही उनकी अहिंसा. सत्य, अहिंसा, ब्रहमचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, शरीर श्रम, आस्वाद, अभय, सर्वधर्म समानता, स्वदेशी और समावेशी समाज निर्माण की परिकल्पना ही उनका आदर्श रहा है। गांधी के आदर्श विचार उनके निजी तथा सामाजिक जीवन तक ही सीमित नहीं रहे। उन विचारों को उन्होंने आजादी की लड़ाई से लेकर जीवन के विविध पक्षों में भी आजमाया। तब लोगों का कहना था कि आजादी के लक्ष्य में सत्य और अहिंसा नहीं चलेग। लेकिन गांधी ने दिखा दिया कि सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलकर भी आजादी को हासिल किया जा सकता है। उन्होंने अहिंसा को शौर्य का शिखर माना। उन्होंने अहिंसा की स्पष्ट व्याख्या करते हुए कहा कि अहिंसा का अर्थ है ज्ञानपूर्वक कष्ट सहना. उसका अर्थ अन्यायी की इच्छा इच्छा के आगे दबकर घुटने टेक देना नहीं। उसका अर्थ यह है कि अत्याचारी की इच्छा के विरुद्ध अपनी आत्मा की सारी शक्ति लगा देना. अहिंसा के माध्यम से गांधी ने विश्व को यह भी संदेश दिया कि जीवन के इस नियम के अनुसार चलकर एक अकेला आदमी भी अपने सम्मान, धर्म और आत्मा की रक्षा के साम्राज्य के सम्पूर्ण बल को चुनौती दे सकता है. गांधी के इन विचारों से विश्व की महान विभूतियों ने

स्वयं को प्रभावित बताया. आज भी उनके विचार विश्व को उत्प्रेरित कर रहे हैं. लोगों द्वारा उनके अहिंसा और सविनय अवज्ञा जैसे अहिंसात्मक हथियारों को आजमाया जा रहा है.

ऐसे समय में जब पूरे विश्व में हिंसा का बोलबाला है, राष्ट्र आपस में उलझ रहे हैं, मानवता खतरे में है, गरीबी, भूखमरी और कुपोषण लोगों को लील रहा है तो गांधी के विचार बरबस प्रासंगिक हो जाते हैं. अब विश्व महसूस भी करने लगा है कि गांधी के बताए रास्ते पर चलकर ही विश्व को नैराश्य, द्वेष और प्रतिहिंसा से बचाया जा सकता है. गांधी के विचार विश्व के लिए इसलिए भी प्रासंगिक हैं कि उन विचारों को उन्होंने स्वयं अपने आचरण में ढालकर सिद्ध किया. उन विचारों को सत्य और अहिंसा की कसौटी पर जांचा-परखा है ।

गांधीवादी विचारधारा

महात्मा गांधी ने न केवल भारत के राजनीतिक क्षेत्र में कार्य , किया अपितु विश्व में क्रांतिकारी चिंतन मौलिक देन थी । महात्मा गांधी पूरे दार्शनिक ही नहीं थे, अपितु धार्मिक भावना से अनुप्राणित होकर जनकल्याण के लिए अनवरत कार्य करने वाले कर्मयोगी थे । उन्होंने प्लेटो, अरस्तु या मार्क्स की तरह व्यवस्थित रूप से अपने सिद्धांतों की विवेचना नहीं की है, बल्कि अपने सामने आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए ही तत्कालीन परिस्थिति के अनुसार चिंतन किया, अपने विचार प्रकट किए और लेख लिखे इसीलिए विभिन्न अवसरों में व्यक्त किए गए उनके विचारों में कुछ विरोध किया और असंगतिया भी मिलती हैं । गांधीजी का एक निश्चित जीवन दर्शन था । राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जटिलताओं के समाधान के लिए उनके कुछ विशेष सिद्धांत एवं उनकी पद्धति थी । उनके इन सिद्धांतों और उनकी कार्यपद्धती को सामूहिक रूप से गांधीवाद के नाम से पुकारा जा सकता है । गांधीवाद की परिभाषा का प्रयत्न करते हुए डॉ० पी. एस . रमैया लिखते हैं - गांधीवाद नीतियां सिद्धांतों नियमों आदेशों आदि का सिद्धांत ही नहीं वरन जीवन का एक रास्ता है । इसके द्वारा जीवन की समस्याओं के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण का प्रतिपादन या पुरातन दृष्टिकोण की पुनः व्याख्या करते हुए आधुनिक समस्याओं के लिए पुरातन हल प्रस्तुत किए गए हैं । गांधी जी के विचारों को गांधीमार्ग कहा जा सकता है । गांधीजी ने इतिहास में पहली बार सत्य , अहिंसा और प्रेम के आध्यात्मिक सिद्धांतों का राजनीति के क्षेत्र में इतने विशाल पैमाने पर प्रयोग किया और उसमें सफलता भी प्राप्त की ।

निष्कर्ष

आज, जब हमारे सार्वजनिक जीवन के साथ-साथ हमारे निजी जीवन में नैतिक मूल्यों का गहरा क्षरण हुआ है और जब नैतिक सिद्धांत राजनीति से लगभग गायब हो गए हैं, तो गांधीवादी मूल्य एक प्रभावी विकल्प के रूप में दिखाई देते हैं। अपने समय में गांधी जी ने न केवल राजनीतिक बल्कि देश को नैतिक नेतृत्व भी प्रदान किया, जो कि अब दुनिया से गायब हो चुका है। जैसा कि मार्टिन लूथर किंग ने सही कहा, "गांधी अपरिहार्य थे। अगर मानवता की प्रगति करनी है, तो गांधी अपरिहार्य हैं। उन्होंने शांति

और सद्भाव की दुनिया विकसित करने की ओर प्रेरित किया। हम अपने जोखिम पर गांधी की उपेक्षा कर सकते हैं।"

संदर्भ सूची

1. आधुनिक भारतीय चिंतन : विश्वनाथ
2. महात्मा गांधी जीवन एवं दर्शन : नाटाणी प्रकाश नारायण - पुनीते प्रकाशन जयपुर
3. महान समाजशास्त्रीय विचारक - बघेल डी. स.
4. सत्य के साथ मेरे प्रयोग - महात्मा गांधी
5. गांधियन कंसेप्ट ऑफ स्टेट - मजूमदार
6. आत्मकथा - महात्मा गांधी
7. गांधी एक अध्ययन - सक्सेना रमेश - विश्व भारती पब्लिकेशन नई दिल्ली
8. गांधी विचार मीमांसा - भारदे, बालासाहेब महात्मा गांधी स्मारक निधि प्रकाशन पुणे , 1993
9. महात्मा गांधी धर्म , पंथ एवं राजनीति - डॉ आदर्श कुमार माथुर
10. गांधी विचार और साहित्य - डॉ सुमन जैन